DR. S. N. DEV PHARMA Magazine

PHARMACY PROFESSIONALS

101 Benefits of Camphor (कपूर)

A handy guide from **COLLEGE OF PHARMACY** on understanding
Benefits of Cinnamomum camphora

(मासिक पत्रिका)

First Edition 1st June 2023

Publishing Partner
PHB Education & Pharma Professionals

Dr. S. N. Dev College of Pharmacy
Sikka - Shamli (U.P.) - 247776
DSNDCOP
विद्या ददाति विनयम्

Dr. S. N. Dev Pharma Magazine

First Edition: 1st June 2023

Editor-in-chief
DR. ARVIND GUPTA
(Principal)

Publishing Partner

1. PHB Education
Shamli (U.P.)
Website: www.phbeducation.com
Mobile No: 09719638415

2. The Association of Young Pharma Professionals
Address:- Noida (U.P.)
Phone No:- +91- 9634308658
Email id:- bhragunandan2112@gmail.com
Website:- http://www.aypponline.in

All rights reserved. No part of this Bulletin should be reproduced, stored in a retrieval system, without the prior written permission of the Editor – in- Chief and the publisher.

1. Functional Committee: **Magazine**

2. Members of magazine Committee:

S. No.	Name	Designation	Role in Committee
1.	Dr. A. K. Gupta	Principal	Chairman, Chief Editor
2.	Mrs. Sindhu	Asst. Professor	Member
3.	Mrs. Anjali	Asst. Professor	Member
4.	Miss. Twinkle	Asst. Professor	Member
5.	Miss. Kanika Kansal	Lecturer	Member
6.	Mrs. Ritu	Asst. Professor	Member
7.	Mr. Rajat	Lecturer	Member
8.	Mr. Shriyanshu Goel	Student	Member
9.	Mr. Ansh Panchal	Student	Member
10.	Miss. Gauri Goel	Student	Member
11.	Mr. Ashish Kumar	Student	Member
12.	Mr. Yashmender	Student	Member
13.	Mr. Muzammil	Student	Member
14.	Miss. Saman	Student	Member
15.	Miss. Minakshi Pundir	Student	Member
16.	Mr. Nafees	Student	Member
17.	Mr. Vansh Sangal	Student	Member
18.	Mr. Vishal kumar	Student	Member
19.	Mr. Vansh Mittal	Student	Member
20.	Mr. Vishu Sharma	Student	Member

Preface

The aim of this magazine is to delineate the essential information about Camphor compound and uses of camphor in different formulation. This magazine provides the basic information of camphor, benefits of camphor and treatment of some disease by the help of camphor formulations. I hope this manageable magazine would serve to provide unique information for different camphor formulation. My sincere thanks are due to my colleagues and students for their valuable comments and suggestions.

Dr. A. K. Gupta

Kapoor (Camphor)

कपूर (Camphor) का मुख्य इस्तेमाल पूजा के दौरान आरती में किया जाता है। कपूर में काफी तेज गंध होती है और यह एक अत्यंत ज्वलनशील पदार्थ है। निर्माण की प्रक्रिया के आधार पर और अलग अलग देशों में कपूर के अलग प्रकार मिलते हैं। कपूर रंगहीन, सफेद या पारदर्शी स्वरुप में चूर्ण या चौकोर आकृति का होता है। बहुत कम लोग जानते हैं कपूर का इस्तेमाल कई दवाइयां बनाने में भी किया जाता है। यहां कपूर (Bhimseni Kapoor) के फायदे और गुणों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है।

कपूर एक प्रकार का जमा हुआ उड़नशील सफेद तैलीय पदार्थ है। आयुर्वेद के कई ग्रंथों में पक्व, अपक्व और भीमसेनी तीन तरह के कपूर का जिक्र है। मुख्य रूप से दो तरह के कपूर प्रयोग में लाये जाते हैं। एक पेड़ों से प्राप्त होता है और दूसरा कृत्रिम रूप से रासायनिक प्रक्रिया द्वारा बनाया जाता है। प्राकृतिक कपूर को भीमसेनी कपूर (Bhimseni Kapoor) कहा जाता है, और यह कृत्रिम कपूर की तुलना में भारी होता है। यही कारण है कि यह जल्दी पानी में डूब जाता है। यह जल्दी उड़ता भी नहीं है।

कपूर के पेड़ की ऊचाई 100 फुट और चौड़ाई 6 से 8 फुट तक हो सकती है। इसके तने की छाल ऊपर से खुरदरी व मटमैली होती है और अन्दर से चिकनी होती है।

इसके पत्ते चिकने, एकान्तर, सुगंधित, हरे व हल्के पीले रंग के होते हैं। इसके पत्ते 2 से 4 इंच लंबे होते हैं। इसके फूल गुच्छों में छोटे-छोटे सफेद पहले रंग के होते हैं।

इसके फल पकने पर काले रंग के हो जाते हैं। बीज छोटे होते हैं। पेड़ के सभी अंगों से कपूर की गंध आती रहती है। इसकी छाल को हल्का काटने से एक प्रकार का गोंद निकलता है जो सूखने के बाद कपूर कहलाता है।

कपूर का वानस्पतिक नाम **Cinnamomum camphora (Linn.) J. Pres.** (सिनेमोमम् कॅम्फोरा) और कुल का नाम Lauraceae (लॉरेसी) है। कपूर को अन्य भाषाओं में निम्न नामों से पुकारा जाता हैः-

Camphor in:

- English : Camphor (कैम्पैंर)
- Sanskrit : कर्पूर, घनसार, चन्द्र, हिमा;
- Hindi : कपूर
- Urdu : काफूर (Kafoor)
- Odia : घोनोसारो (Ghonosaro), कोपूरो (Kopuro)
- Kannad: कर्पूर (Karpoor), चन्द्रधवल (Chandradhaval), कामडा (Kamada)
- Gujrati : कपूर (Kapoor)
- Telugu : कर्पूरम् (Karpuram), हिमवालुका (Himvaluka), चंद्रमु (Chandramu)
- Tamil : कर्पूरम् (Karpuram), कणसारम (Kansaram), सिद्लम (Sidlam)
- Bengali : कर्पूर (Karpoor)
- Nepali : कपूर (Kapoor)
- Marathi : कापूरा (Kapoora)
- Malyalam : कर्पूरम (Karpooram), हिमांशु (Himanshu), शुभमसु (Subhramasu)।
- English : कैम्पैंर लॉरेल (Camphor laurel), कैम्पैंर ट्री (Camphor Tree)
- Arabi: काफूर (Kafoor)
- Persian : काफूर (Kafur)

Types of Kapoor (Camphor)

कपूर स्थान, बनावट और रंग के अनुसार अनेक प्रकार के होते हैं लेकिन यह भीमसेनी, चीनी और भारतीय कपूर के नाम से अधिका प्रचलित है।

भीमसेन कपूर अच्छा होता है और इसका प्रयोग औषधि के रूप में प्राचीन काल से होता आ रहा है। यह चीनी कपूर से भारी होता है और पानी में डूब जाता है, जबकि चीनी कपूर पानी में नहीं डूबता। पिपरमेंट और अजवायन रस के साथ चीनी कपूर को मिलाने से यह द्रव में बदल जाता है।

भारतीय कपूर कपूर तुलसी के पौधे से प्राप्त की जाती है जो तुलसी कुल की ही एक जाति है। तुलसी की तरह ही इस पौधे की पत्तियों से तेज खुशबू आती है। इसकी पत्तियों से 61 से 80 प्रतिशत की मात्रा में कपूर मिलता है, जबकि बीजों से हल्के पीले रंग का तेल 12.5 प्रतिशत की मात्रा में निकलता है।

According to Ayurveda, properties of Kapoor (camphor):

1. कपूर मीठा व तिखा, कडुवा, लघु, शीतल होता है और इसका रस कडुवा होता है।
2. कपूर स्वाद में कडुवा होने के कारण त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) को नष्ट करने वाला होता है।
3. कपूर प्यास को शांत करने वाला, पाचनशक्ति को बढ़ाने वाला, ज्वर दूर करने वाला, रुचि बढ़ाने वाला, हृदय उत्तेजक, पसीना लाने वाला, कफ निकालने वाला, दर्द को दूर करने वाला, वीर्य को बढ़ाने वाला, पेट के रोग को ठीक करने वाला एवं सूजन को मिटाने वाला होता है।
4. यह कामोत्तेजना व गर्भाशय उत्तेजना को शांत करता है और पेट के कीड़े व कमर दर्द को दूर करता है।
5. फोड़े-फुंसी, नकसीर, कीड़े होना, क्षय (टी.बी.), पुराना बुखार, दस्त रोग, हैजा, दमा, गठिया, जोडों का दर्द, टेटेनस, कुकुर खांसी एवं फेफड़ों के रोग आदि में कपूर का प्रयोग करना लाभकारी होता है।
6. दिल की धडकन बढ़ जाने पर इसके प्रयोग करने से धड़कन की गति सामान्य होती है।

Dose:

कपूर को लगभग 1 ग्राम के चौथाई भाग की मात्रा में प्रयोग करना लाभकारी होता है।

kapoor ke fayde / Benefits Of Camphor

1) **खाज-खुजली:** चमेली के तेल में कपूर मिलाकर शरीर पर मालिश करने से खुजली दूर होती है।

2) **हाथ पैरों की ऐंठन:** कपूर को चार गुने सरसों के तेल में मिलाकर हाथ-पैरों पर मालिश करने से हाथ-पैरों की ऐंठन दूर होती है। कपूर का सेवन करने से हाथ-पैरों की ऐंठन दूर हो जाती है।

3) **त्वचा के रोग:** कपूर को पीसकर नारियल के तेल में मिलाकर त्वचा पर दिन में 2 से 3 बार नियमित रूप से कुछ दिनों तक लगाने से त्वचा के रोग दूर होते हैं।

4) **सर्दी-जुकाम:** सर्दी-जुकाम से पीड़ित रोगी को रुमाल में कपूर का एक टुकड़ा लपेटकर बार-बार सूंघना चाहिए। इससे सर्दी-जुकाम में आराम मिलता है और बंद नाक खुलती है।

5) **सिर दर्द:** यदि सिर दर्द हो तो कपूर और चंदन को तुलसी के रस में घिसकर लेप बनाकर सिर पर लगाए। इससे सिर का दर्द दूर होता है।

कपूर और नौसादर को एक शीशी के बोतल में भर दें और जब सिर दर्द हो तो इसे सूंघे। इससे सिर का दर्द दूर होता है।

सिर दर्द होने पर गुलरोगन का रस और कपूर का रस मिलाकर इसके 2 से 3 बूंद नाक में डालने से माईग्रेन (आधे सिर का दर्द) ठीक होता है।

कपूर का रस सिर पर लगाने या मलने से सिर का दर्द ठीक होता है।

6) **गठिया रोग:** 500 मिलीलीटर तिल के तेल में 10 ग्राम कपूर मिलाकर शीशी में भरकर उसके बाद ढक्कन को बंद करके धूप में रख दें। जब कपूर तेल में पूरी तरह से घुल जाए तो गठिया के जोड़ों पर अच्छी तरह से मालिश करें।

7) **बिच्छू के डंक:** बिच्छू के डंक से पीड़ित रोगी को कपूर को सिरके में मिलाकर डंक वाले स्थान पर लगाना चाहिए। इससे बिच्छू का जहर नष्ट हो जाता है।

8) **प्रसव का दर्द:** यदि प्रसव के समय तेज दर्द हो रहा हो तो स्त्री को पके केले में 125 मिलीग्राम कपूर मिलाकर खिलाना चाहिए। इससे के सेवन से बच्चे का जन्म आराम से हो जाता है।

9) **नपुंसकता:** यदि किसी व्यक्ति में नपुंसकता आ गई हो तो उसे कपूर को घी में घिसकर लेप बनाना चाहिए और उससे लिंग की मालिश करनी चाहिए। इसका प्रयोग कुछ हफ्ते तक करते रहने से नपुंसकता दूर होती है।

10) आंखों के रोग: आंखों के रोग से पीड़ित रोगी को भीमसेनी कपूर को दूध के साथ पीसकर उंगली से आंखों में लगाएं इससे बहुत सारे रोग में फायदा होता हैं।

11) स्तनों के दूध का बढ़ना: यदि किसी स्त्री का दूध पीता बच्चा मर जाता है तो उसके मरने के बाद स्तनों में लगातार दूध बनता रहता है। ऐसे में स्तनों की दूध की अधिकता को दूर करने के लिए कपूर को पानी में घिसकर लेप बनाकर स्तनों पर दिन में 3 बार लगाएं। इससे स्तनों में दूध का अधिक बनना कम हो जाता है।

12) आमवात (गठिया): गठिया के दर्द से पीड़ित रोगी को तारपीन के तेल में कपूर मिलाकर रोगग्रस्त अंगों पर सुबह-शाम मालिश करना चाहिए। इससे आमवात (गठिया) का दर्द नष्ट होता है।

13) रक्तपित्त: रक्तपित्त से पीड़ित रोगी को थोडा-सा कपूर पीसकर गुलाबजल में मिलाकर उसके रस को नाक में टपकाना चाहिए। इससे रक्तपित्त नष्ट होता है।

14) घाव: यदि घाव जल्दी ठीक न हो रहा हो तो कपूर को उस पर लगाना चाहिए।

15) दमा: 125 मिलीग्राम कपूर व 125 ग्राम हींग मिलाकर दिन में 3 बार सेवन करने से श्वास (दमा, अस्थमा) रोग की शिकायतें दूर होती है।

10 ग्राम कपूर व 10 ग्राम भुनी हुई हींग लेकर पीस लें और इसमें अदरक का रस मिलाकर चने के बराबर गोलियां बना लें। इस गोलियों को छाया में सुखाकर 1-1 गोली दिन में 3-4 बाद पानी के साथ सेवन करना चाहिए। इसके सेवन से दमा रोग में लाभ मिलता है।

कपूर को पानी में डालकर उबालें और उससे निकलने वाले भाप को सूंघे। इससे सांस सम्बन्धी परेशानी दूर होती है।

सांस रोग, चोट लगना व मोच आदि की शिकायत होने पर प्रतिदिन रात को थोड़ा सा कपूर मुंह में रखकर चूसना चाहिए। इससे सभी रोग दूर होता है।

16) खुजली: 10 ग्राम कपूर, 10 ग्राम सफेद कत्था और 5 ग्राम सिन्दूर को एक साथ कांच के बर्तन में डालकर मिला लें और फिर उसमें 100 ग्राम घी डालकर अच्छी तरह मसल लें। फिर इस मिश्रण को 121 बार पानी से धोएं। इस तरह तैयार मलहम को त्वचा की खुजली पर लगाने से खुजली दूर होती है। इसका प्रयोग सड़े-गले जख्मों पर भी करना लाभकारी होता है।

17) बच्चों के पेट में कीड़े होना: यदि बच्चे के पेट में कीड़े हो गए हों तो थोडा सा कपूर गुड़ में मिलाकर देने सेवन कीड़े मरकर बाहर निकल जाते हैं। इससे पेट दर्द में जल्दी लाभ मिलता है।

डॉ0 एस. एन. देव कॉलेज ऑफ फॉर्मेसी

Dr. S.N. DEV COLLEGE OF PHARMACY

Approved by PCI, New Delhi

Affiliated to BTE Lucknow

ADMISSION OPEN

REGULAR COURSES:

- D.PHARMA
- B.PHARMA (Proposed)

प्रवेश प्रारम्भ

Principal
DR. ARVIND GUPTA
(M.Pharm, M.Sc & Ph.D)

Saharanpur Road, Shamli - 247776 (U.P.)

Web : www.dsnd.edu.in, Email : arvindrkgit@gmail.com

M. : 9837453444, 9359796362, 9359796371, 8923686500

18) आंखों का फूलना: बरगद के दूध में कपूर को पीसकर मिला लें और इसे 2 महीने तक फूली आंखों पर लगाए। इससे आंखों का फूलना ठीक होता है।

19) मूत्राघात (पेशाब में वीर्य आना): मूत्राघात रोग से पीड़ित रोगी को कपूर के चूर्ण में कपड़े की बत्ती बनाकर लिंग पर रखना चाहिए। इससे मूत्राघात नष्ट होता है।

अगर पेशाब बंद हो गया हो तो लिंग के ऊपर कपूर का टुकड़ा रखना चाहिए। इससे पेशाब खुलकर आता है।

पेशाब बंद हो जाने पर कपूर को पानी में पीस लें और उसमें कपड़े को भिगोंकर उसकी बत्ती बनाकर लिंग पर रखें। इससे रोग ठीक होता है।

20) पलकों के बाल झड़ना: कपूर को नींबू के रस में मिलाकर पलकों पर लगाने से पलकों के बाल झड़ना ठीक होता है।

21) पेट का दर्द: 4 या 5 कपूर के टुकड़े को चीनी के साथ मिलाकर सेवन करने से पेट का दर्द दूर होता है।

22) छाती का रोग: कपूर को जलाकर उसके धुंए को नाक के द्वारा लेने से छाती का रोग दूर होता है।

23) गर्भाशय का दर्द: कपूर को घी में मिलाकर नाभि के नीचे मलने से और इसके 3-4 टुकड़े चीनी के साथ खाने से गर्भाशय का दर्द ठीक होता है।

24) आंखों का दुखना: कपूर का चूरा आंखों में अंजन की तरह लगाने से आंखों का दर्द दूर होता है। यदि किसी को नींद न आती हो तो उसे कपूर को आंख में लगाना चाहिए। इससे नींद आती है।

25) स्वप्नदोष: 130 मिलीग्राम कपूर को एक चम्मच चीनी के साथ पीसकर रोज रात को सोते समय फंकी लेने से स्वप्नदोष की शिकायते दूर होती है।

26) बदहजमी: कपूर और हींग को बराबर मात्रा में लेकर छोटी-छोटी गोलियां बना लें और इसकी 1-1 गोली दिन में 3 बार ठंडे पानी के साथ सेवन करें। इससे बदहजमी दूर होती है।

27) मुहांसे: चेहरे पर कील-मुहांसे हो गया हो तो 3 चम्मच बेसन, चौथाई चम्मच हल्दी, चुटकी भर कपूर व नींबू का रस मिलाकर लेप बना लें। इस तैयार पेस्ट को चेहरे पर लेप करें और जब यह सूख जाए तो इसे ठंडे पानी से धो लें। इससे चेहरे की मुहांसे ठीक होते हैं।

28) चेहरे के दाग: धब्बे: 2 चम्मच पिसी हुई हल्दी, गुलाबजल और चुटकी भर कपूर को मिलाकर चेहरे पर रोजाना लेप करें। इसका प्रयोग 15-20 दिनों तक करने से दाग-धब्बे दूर होते हैं। इसका लेप करते समय ध्यान रखें कि लेप आंखों के पास न लगें।

29) जुएं: यदि बालों में जुएं अधिक हो गई हो तो 3 चम्मच नारियल के तेल में थोडा-सा कपूर चूर्ण मिलाकर रात को सोते समय बालों के जडों में लगाएं और सुबह उठने के बाद बाल को धोकर बारीक कंघी से बालों को झाड़ें। इससे जुएं मरकर अपने आप निकल आती है।

30) आन्त्रिक ज्वर: आन्त्रिक ज्वर से पीड़ित रोगी को को 120 से 240 मिलीलीटर कपूर (camphor/Kapoor) या कपूर का रस 5 से 20 बूंद की मात्रा में सेवन कराना चाहिए। इससे सेवन से रक्तवाहिनियां फैलती है और अधिक पसीना आकर ज्वर (ताप) का तापमान कम हो जाएगा। इसका प्रयोग करते रहने से बुखार ठीक हो जाता है।

आन्त्रिक ज्वर (टाइफाइड) में यदि बच्चे को बार-बार दस्त आ रहा हो तो उसे तुरन्त बंद करने के लिए बच्चे को कपूर की गोली को पीसकर पानी के साथ सेवन करानी चाहिए। इसका प्रयोग लगातार करने से दस्त का अधिक आना कम होता है।

31) दांतों का दर्द: कपूर 5 ग्राम व अकरकरा 5 ग्राम की मात्रा में एक साथ बारीक पीसकर पाउडर बना लें। इससे मंजन करने से मसूढ़ों की सूजन दूर होती है।

दांत खोखला हो और उसमें दर्द हो तो इसका प्रयोग करें- कपूर, भूना सुहागा, अकरकरा तथा नौसादर को पीसकर इन सब को देशी मोम में मिलाकर दांत के गड्ढे में भरें। इससे दांतों का दर्द ठीक होता है और दांतों का खोखलापन भी भरता है।

कपूर या अदरक या नौसादर को पीसकर रुई में लपेटकर दांतों के खोखले में दबा कर रखने से दर्द में जल्द आराम मिलता है।

यदि दांतों में दर्द हो तो दर्द वाले दांत के नीचे कपूर का टुकड़ा रखने से दांतों का पुराना दर्द ठीक होता है।

32) अंडकोष की खुजली: अंडकोष की खुजली से पीड़ित रोगी को 120-240 मिलीग्राम कपूर का सुबह-शाम सेवन करना चाहिए। कपूर को जलाकर उसके राख को तेल में मिलाकर लगाने से अंडकोष की खुजली मिटती है।

33) मलेरिया का बुखार: 5 ग्राम कपूर चूरा को पानी के साथ सेवन करने से मलेरिया का बुखार ठीक होता है।

34) बुखार: कपूर 600 से 1800 मिलीग्राम या कर्पूरासव का 5 से 20 बूंदे या कर्पूराम्बु (कपूर का पानी) 28 से 58 मिलीलीटर का सेवन करने से बुखार का रोग ठीक होता है। इसके साथ पतले कपड़े में बांधने से रक्तवाहिनियां फैलती है जिससे पसीना खुलकर आता हैं और बुखार का तेज कम हो जाता है।

Elemi Herbs Pharma Company

Bara Bazar, Shamli, Shamli – 247776
Phone: 090276 86404

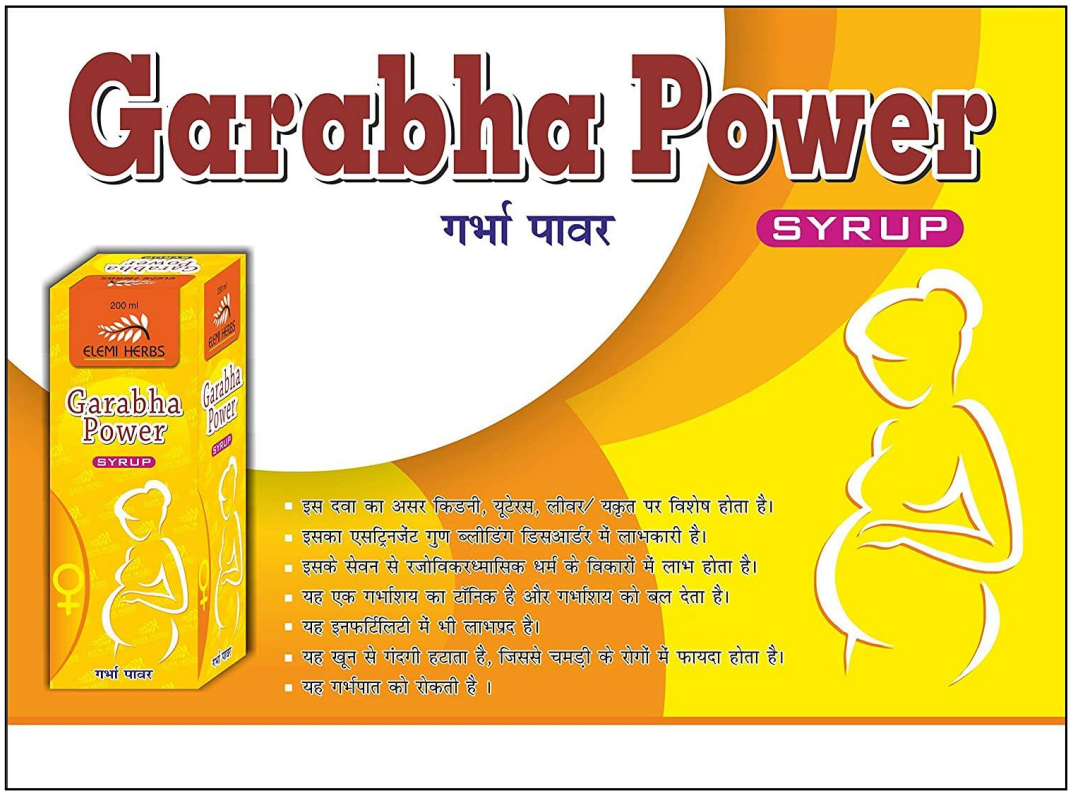

4 या 5 पीस कपूर को पान में डालकर खाने से आधे घण्टे के अन्दर पर सेवन करने से पसीना आकर बुखार कम हो जाता है।

35) काली खांसी: काली खांसी होने पर बच्चों को बिस्तर पर सुलाने से पहले उसके सीने और कमर पर कपूर के तेल मालिश करने से काली खांसी ठीक होती है।

36) खांसी: बच्चे को खांसी होने पर कपूर के तेल से छाती व पीठ पर मालिश करने से खांसी कम होती है।

37) मोतियाबिन्द: भीमसेनी कपूर को घिसकर दूध में मिलाकर आंखों में लगाने से मोतियाबिन्द में आराम मिलता है।

38) दांत मजबूत करना: कपूर 10 ग्राम और नौसादर 10 ग्राम को मिलाकर पीस लें और इसे रात को खाना खाने के बाद दांतों पर मलकर कुल्ला करें। इससे दांतों में मजबूती आती है।

39) दिन में दिखाई न देना: कपूर(camphor/Kapoor) को शहद में मिलाकर आंखों में रोजाना 2-3 बार काजल की तरह लगाने से आंखों की रोशनी साफ होती है।

40) दांतों में कीड़े लगना: कपूर को एल्कोहल में घोलकर, रुई में लगाकर, दांतों के गड्ढ़े में रखने से दांतों के कीड़े मर जाते हैं। यदि दांतों में कीड़ हो गए हो तो कपूर कचरी को मंजन की तरह दांतों पर मलें। इससे दांतों का दर्द व कीड़े खत्म होते हैं।

41) इंफ्लुएन्जा: कपूर का एक टुकड़ा पास में रखने से इन्फ्लुएन्जा नहीं होता हैं।

कर्पूरासव की 5 से 20 बूंद बतासे पर डालकर खाने और ऊपर से पानी पीने से लाभ होता हैं। इसका प्रयोग सुबह-शाम करने से इंफ्लुएन्जा रोग ठीक होता है।

42) डेंगू का बुखार: कर्पूरासव 5 से 10 बूंदे बतासे पर डालकर सुबह-शाम लेने से रक्तवाहिनियां फैलती है और अधिक पसीना आकर बुखार, जलन और बेचैनी कम होती है।

43) पायरिया: पायरिया होने पर कपूर का टुकड़ा पान में रखकर खूब चबाएं लेकिन चबाते समय ध्यान रखें कि रस अन्दर न जाएं। लार व रस को बाहर थूकते रहें। इसका प्रयोग काफी दिनों तक करने से पायरिया रोग ठीक होता है।

देशी घी में कपूर मिलाकर प्रतिदिन 3 से 4 बार दांत व मसूढ़ों पर धीरे-धीरे मलें तथा लार को गिरने दें एवं थोड़ी देर बाद कुल्ला कर लें। इससे पायरिया रोग ठीक होता है।

44) निमोनिया: निमोनिया के रोग से पीड़ित रोगी को 2 ग्राम कपूर और 10 तारपीन का तेल मिलाकर पसलियों की मालिश करने से निमोनिया का लाभ होता है।

कपूर का एक टुकड़े को उसके चार गुने सरसों के तेल में मिलाकर पसलिसों पर मालिश करने से पसलियों का दर्द ठीक होता है।

45) योनि की जलन व खुजली: योनि में खुजली या जलन होने पर कपूर 120 से 240 मिलीग्राम की मात्रा में सुबह-शाम सेवन करने से रोग ठीक होता है। इसके सेवन के साथ कपूर को तेल में घोलकर खुजली वाले स्थान पर भी लगाएं।

46) वमन (उल्टी): कपूर का रस 3 से 4 बूंद पानी में मिलाकर रोगी को पिलाने से उल्टी आना बंद होता है। चीनी में थोड़े से कपूर को मिलाकर खाने से उल्टी बंद होता है।

47) खून की उल्टी: 2 ग्राम कपूर और 1 ग्राम भांग को पीसकर पानी में मिलाकर मूंग की दाल के आकार की गोलियां बना कर छाया में सुखा लें। इसमें से 1-1 गोली हर 3-3 घंटे के अंतर पर पानी के साथ लेने से खून की उल्टी में आराम मिलता है

48) मुंह के छाले: कपूर का पाउडर छालों पर लगाने से मुंह के छाले व दाने खत्म होते हैं।

कपूर और मिश्री बराबर मात्रा में मिलाकर चुटकी भर की मात्रा में इसे दिन में 3 से 4 बार चूसने से मुंह के छाले नष्ट होते हैं।

मिश्री को बारीक पीसकर उसमें थोड़ा-सा कपूर मिलाकर मुंह में लगाएं। इससे मुंह के छाले खत्म होते हैं। इसका प्रयोग बच्चों के मुंह में छाले होने पर भी किया जाता है।

पान में चने के बराबर कपूर का टुकड़ा डालकर चबाने व पीक थूकते रहने से मुंह के जख्म ठीक होते हैं।

कपूर को नारियल के तेल में मिलाकर छालों पर लगाने से मुंह के छाले ठीक होते हैं।

देशी घी में कपूर मिलाकर रोजाना 4 बार जख्म या छालों पर लगाने एवं लार गिराते रहने से मुंह के जख्म व छाले नष्ट होते हैं।

49) हिचकी: कपूर और कचरी का घोल बनाकर रोजाना 2 से 3 बार सेवन करने से हिचकी में लाभ होता है।

50) गर्भपात से रक्षा: भीमसेनी कपूर को गुलाब के रस में पीसकर योनि पर मलने से गर्भपात नहीं होता है।

51) गर्भाशय के रोग: मासिकधर्म के समय यदि गर्भाशय में किसी प्रकार की पीड़ा हो तो कपूर 120 मिलीग्राम से 240 मिलीग्राम की मात्रा में सुबह-शाम सेवन करने से रोग में लाभ मिलता है। गर्भाशय की पीड़ा

अन्य कारणों से होने पर भी इसका प्रयोग लाभकारी होता है। गर्भवती स्त्री को इसका सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे दूध कम हो जाता है।

52) कमर दर्द: कमर दर्द में कपूर को 4 गुने तीसी के तेल में मिलाकर कमर पर मालिश करें। इससे कमर दर्द में लाभ होता है।

53) बवासीर (अर्श): एक कपूर को आठ गुना आरण्डी के गर्म तेल में मिलाकर मलहम बना लें और सुबह शौच से आने के बाद मस्सों को धोकर व पौंछकर साफ करके इस मलहम को उस पर लगाएं। इसको लगाने बवासीर का दर्द, जलन व चुभन दूर होता है तथा मस्से सूखकर गिर जाते हैं।

कपूर, रसोत, चाकसू और नीम का फूल 10-10 ग्राम की मात्रा में लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। इसके बाद एक मूली को लम्बाई में बीच से काटकर उसमें चूर्ण को भर दें और मूली को कपड़े से लपेटकर उसके ऊपर मिट्टी लगाकर आग में भून लें। भून जाने के बाद मूली के उपर से मिट्टी, कपड़े उतार कर मूली को सिलबट्टे पर पीस लें और मटर के बराबर गोलियां बना लें। 1 गोली प्रतिदिन सुबह खाली पेट पानी के साथ लेने से एक सप्ताह में ही बवासीर ठीक हो जाती है।

54) चोट लगना: चोट लगने पर घी और कपूर बराबर मात्रा में मिलाकर चोट वाले स्थान पर बांधे। इससे चोट लगने से होने वाले दर्द में आराम मिलता है और खून बहना भी ठीक होता है। कपूर को उसके 4 गुने तेल में मिलाकर चोट, मोच, ऐंठन आदि में मालिश करने से दर्द दूर होता है।

55) मासिकधर्म सम्बंधी गड़बड़ी: आधा ग्राम मैदा व कपूरचूरा को मिलाकर 4 गोलियां बना लें। इन गोलियों में से एक गोली प्रतिदिन सुबह खाली पेट सेवन करने से मासिकधर्म सम्बंध गड़बड़ी दूर होती है। इसका सेवन मासिकस्राव से लगभग 4 दिन पहले करना चाहिए। मासिकधर्म शुरू होने के बाद इसका सेवन करना हानिकारक होता है।

56) घाव: रसौत और कपूर को मक्खने में मिलाकर घाव पर लगाने से कटने से होने वाले घाव एवं पुराना घाव ठीक होता है।

57) अग्निमान्द्य (पाचनशक्ति की कमजोरी): डली कपूर 10 ग्राम, अजवाइन का रस 10 ग्राम, पुदीने का रस 10 मिलीलीटर और यूकेलिप्टस आयल 10 ग्राम को पीसकर एक शीशी में रखकर एक घंटे तक रखें। इसमें से 2 बूंद सुबह-शाम खाना खाने के बाद पानी के साथ सेवन करें।

58) रक्तचाप (ब्लड प्रेशर):

कपूर 120 से 240 मिलीग्राम की मात्रा में प्रतिदिन सुबह-शाम लेने से रक्तचाप कम होता है। कपूर का रस 5 से 20 बूंद की मात्रा में बतासे पर डालकर प्रतिदिन 2 से 3 बार लेने से रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) सामान्य होता है।

59) छींक अधिक आना: यदि अधिक ठंड लगने या पानी में भीग जाने के कारण छींक अधिक आती हो तो एक चावल के दाने के बराबर कपूर को बतासे में डालकर या चीनी के साथ मिलाकर खाएं और ऊपर से पानी पीए। इससे छींक का अधिक आना व जुकाम में लाभ मिलता है।

60) लू लगना: यदि किसी को लू लग गया हो तो कपूर का रस लगभग 10 बूंद की मात्रा में पानी के साथ थोड़ी-थोड़ी देर में रोगी को पिलाने से लू से आराम मिलता है।

61) शीतपित्त: शीतपित्त के रोग से पीड़ित रोगी की त्वचा पर कपूर(camphor/Kapoor) को नारियल के तेल में मिलाकर लगाना चाहिए। इससे शीतपित्त के रोग में लाभ मिलता है।

कपूर को नीम के तेल मे मिलाकर शीतपित्त के रोग से ग्रस्त रोगी के चकत्तों पर लगाना चाहिए। इससे रोग में जल्दी लाभ मिलता है।

62) पानी में डूबना: 240 मिलीग्राम की मात्रा में कपूर या 5 से 20 बूंद कपूर का रस बतासे में डालकर रोगी को पिलाने से पूरे शरीर में शक्ति ऊर्जा बढ़ती है और रोगी में जीने की आशा बढ़ जाती है।

63) पाला मारना: यदि अधिक ठंड के कारण पाला मार गया हो तो शरीर का तापमान बढ़ाने के लिये कपूर (कपूर) को बताशे या चीनी में मिलाकर रोगी को सेवन कराएं। इससे शारीरिक तापमान बढ़कर रोग दूर होता है।

पाला से ग्रस्त रोगी का शारीरिक तापमान बढ़ाने के लिये 5 से 10 बूंदे कपूर का रस बताशें या चीनी के साथ सेवन कराने से लाभ होता है।

64) प्लेग रोग: प्लेग से बचने के लिये और अपने आस-पास के वातावरण शुद्ध करने के लिये कपूर को जलायें।

65) पेटदर्द: पेटदर्द या गैस व जलन होने पर कपूर, अजवायन व पुदीने को शर्बत में मिलाकर पीने से आराम मिलता है

66) दांतों में कीड़े लगना: कपूर का टुकड़ा दांत या दाढ़ पर लगाने से दांतों के कीड़े मार जाते हैं।

67) लिंग की त्वचा का न खुलना: तीसी के तेल में कपूर मिलाकर उससे लिंग पर मालिश करने से लिंग के अगले भाग की त्वचा खुल जाती है।

68) स्तनों में दूध का अधिक होना: कपूर को पीसकर पेस्ट बनाकर स्तनों पर लगाने और 120 से 240 मिलीग्राम की मात्रा में सेवन करने से स्त्रियों के स्तनों में दूध की अधिक बनना कम होता है।

69) धातुदोष (वीर्य की कमजोरी): 240 ग्राम कपूर तथा 30 ग्राम अफीम को मिलाकर गोली बनाकर रात को सोते समय खाने से वीर्य-सम्बन्धी रोग मिट जाते हैं।

70) नाक के रोग: 10 ग्राम कपूर को 10 मिलीलीटर तारपीन के तेल के साथ मिलाकर पीस लें और एक शीशी में भरकर रख दें। जब कपूर अच्छी तरह से गल जाए तो इसे मिलाकर रोगी के नाक में 5-5 बूंद करके डाल लें। इसको नाक में डालने से पीनस (पुराना जुकाम) रोग ठीक होता है और नाक के कीड़े भी समाप्त होते हैं।

जुकाम होने पर कपूर को नाक से सूंघने से भी जुकाम ठीक होता है।

लगभग 120 मिलीग्राम कपूर को एक चम्मच बतासे या चीनी में डालकर सेवन करने और ऊपर से पानी पीने से जुकाम में लाभ होता है। शुरुआत में एक ही बार लेना काफी है अगर जरूरत पड़े तो दूसरी बार भी ले सकते हैं।

अगर जुकाम होने के कारण छींके आ रही हो तो चावल के एक दाने के बराबर कपूर को एक चम्मच चीनी के साथ मुंह में रखकर पानी पी लें। इससे जुकाम भी ठीक हो जाता है और छींके भी बंद हो जाती है।

अगर जुकाम पुराना हो जाने की वजह से नाक मे कीड़े पड़ जाये तो नाक में से बदबू आने लगती है। ऐसा होने पर 3 ग्राम कपूर और 6 ग्राम सेलखड़ी को मिलाकर पीस लें। इस रस को रोजाना 3-4 बार नाक में डालने से आराम आता है।

71) नकसीर: कपूर और तिल के तेल को एक साथ मिलाकर नाक मे डालने से नकसीर (नाक से खून बहना) के रोग में आराम आता है।

कपूर और सफेद चंदन को माथे पर लेप करने से नकसीर (नाक से खून बहना) के रोग में आराम आता है।

देसी घी के अन्दर थोड़ा सा कपूर मिलाकर नाक में डालने से नकसीर (नाक से खून बहना) ठीक हो जाती है।

लगभग 120 ग्राम कपूर के चूर्ण को हरे धनिए के साथ पानी में मिलाकर नाक में डालने से नकसीर (नाक से खून बहना) ठीक होता है।

72) विकारी भाव कम करना: कपूर को 120 मिलीग्राम की मात्रा में प्रतिदिन खिलाने से स्त्री की कामोत्तेजना कम होती है।

73) पीनस रोग: 3 ग्राम देसी कपूर और 6 ग्राम सेलखड़ी को एक साथ मिलाकर पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को नाक से सूंघने से पीनस (पुराना जुकाम) दूर होता है।

10 कपूर और 10 ग्राम तारपीन के तेल को मिलाकर थोड़ी देर के धूप में सूखाकर एक शीशी में रख लें। इसमें से 5-5 बूंद-बूंद तेल रोगी की नाक में डालने से 3 से 6 बार में ही पीनस (पुराना जुकाम) ठीक हो जाता है।

74) मूर्च्छा (बेहोशी): लगभग 1 ग्राम कपूर और 6 ग्राम सफेद चंदन को गुलाब के रस में घिसकर माथे, छाती और पूरे शरीर पर लेप करने से बेहोशी दूर होती है।

कपूर और हींग को लगभग 3-3 ग्राम की मात्रा में महीन पीसकर लगभग 240-240 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम पानी के साथ देने से बेहोशी दूर होती है।

75) दिल की धड़कन बढ़ना: यदि दिल की धड़कन तेज हो गई हो तो रोगी को थोड़ा-सा कपूर सेवन का सेवन कराएं। इससे दिल की धड़कन सामान्य बनती है।

76) हैजा: हैजा से पीड़ित रोगी को ठीक करने के लिए इसका उपयोग करें। शुद्ध कपूर 20 ग्राम, भुनी हुई हींग 12 ग्राम, शुद्ध अफीम 10 ग्राम और लाल मिर्च व ईसबगोल 5-5 ग्राम की मात्रा में लेकर पानी के साथ पीस लें। इसके बाद इसके चने के बराबर गोलियां बना लें और यह 1-1 गोली गुलाबजल अथवा ताजे पानी से 1-1 घंटे के अंतर पर रोगी को देते रहने से 2-3 मात्रा में ही दस्त व उल्टी रुक जाती है।

यदि किसी में हैजा शुरुआती अवस्था दिखाई दे तो कर्पूरासव को बताशे में डालकर बार-बार देने से हैजा रोग में लाभ होता है। इसका प्रयोग सांस, हृदय तथा रक्तसंचार के लिए उत्तेजक है।

कपूर, अजवायन रस व पिपरमिंट को बराबर मात्रा में मिला लें और इससे प्राप्त रस को 1-1 बूंद की मात्रा में बताशे में रखकर रोगी को दें। इससे हैजा रोग में बेहद लाभ होता है।

कपूर को महीन कपड़े में बांधकर पानी में डूबों देने से वह पानी कर्पूराम्बु कहलाता है। कर्पूराम्बु का सेवन बीच-बीच में करते रहने से स्थिति खराब नहीं हो पाती। 30 मिलीग्राम से 50 मिलीग्राम मात्रा में काफी है।

77) गुल्यवायु हिस्टीरिया: लगभग 28 मिलीलीटर कपूर कचरी का रस सुबह-शाम सेवन करने से हिस्टीरिया रोग ठीक होता है।

78) नहरूआ (स्यानु): 1.50 ग्राम कपूर को दही में घोलकर 3 दिन तक पीने से नहरूआ रोग नष्ट होता है। इसके प्रयोग से हिड्डयों में घाव होने से रुकता है।

79) नाखून के रोग: 1-1 ग्राम कपूर और गंधक लेकर उसे मिट्टी के तेल में मिला लें। जब यह मलहम की तरह हो जाए तो उसे नाखूनों पर प्रतिदिन 2 से 3 बार लेप करें। इससे नाखूनों पर लेप करने से रोगी में जल्द लाभ मिलता है।

80) चेचक (मसूरिका): लगभग 120 मिलीग्राम से 240 मिलीग्राम कपूर या 5 से 20 बूंद कर्पूरासव या 28 मिलीलीटर से 56 मिलीलीटर कर्पूराम्बु का सेवन करना चाहिए। इससे अधिक पसीना आकर बुखार निकल जाता है। कपूर को पतले कपड़े मे बांधकर पानी में डुबाने से कर्पूराम्बु बनता है।

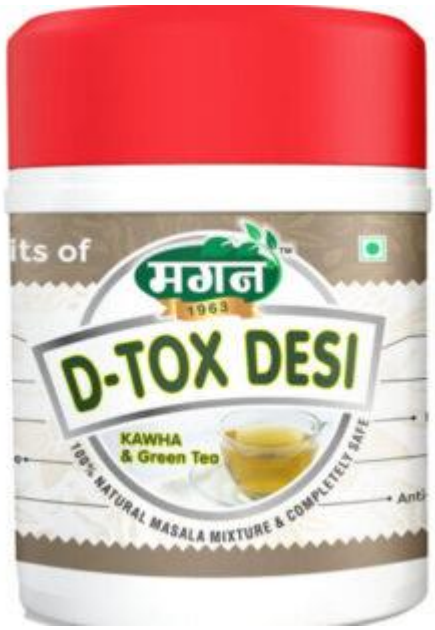

81) पसलियों का दर्द: यदि पसलियों में दर्द हो रहा हो तो कपूर का रस छाती व पसलियों पर मालिश करें। इससे पसलियों का दर्द ठीक होता है।

82) दाद: गन्धक, कपूर व मिश्री को बराबर मात्रा में लेकर पानी के साथ पीसकर दाद पर लगाने से दाद मिटता है।

83) फोड़े-फुंसियों पर: 20 ग्राम कपूर, 20 ग्राम राल, 10 ग्राम नीलाथोथा, 20 ग्राम मोम और 20 ग्राम सिन्दूर को पीसकर घी मे मिलाकर लेप बना लें। इस तैयार लेप को प्रतिदिन फोड़े-फुंसियों पर लगाने से आराम मिलता है।

84) हाथों का खुरदरापन: तिल के तेल में साफ मोम और थोड़ा सा कपूर डालकर गर्म कर लें। अब इस मिश्रण को एक शीशी में भरकर रख लें। रोज रात को हाथों पर इस तेल को लगाने से खुरदरापन दूर होता है।

85) सूखी खुजली: 10 ग्राम कपूर को लगभग 58 ग्राम चमेली के तेल में मिलाकर लेप बना लें और इस तैयार लेप को खुजली वाले स्थान पर लगाएं। इसके प्रयोग से सूखी खुजली जल्द दूर होती है।

86) होंठों के रोग: गाय के घी को 100 बार ताजे पानी में धोकर साफ कर लें और फिर उस घी में कपूर मिलाकर होठों पर लगाएं। इससे होठों के कटने-फटने व अन्य रोग ठीक होते हैं।

87) खून का निकलना: यदि शरीर के किसी अंग से खून निकल रहा हो तो खून रोकने के लिए लाल चंदन और कपूर को मिलाकर कुछ दिनों तक सेवन करने से लाभ होता है।

88) लिंगोद्रक: 120 से 240 मिलीग्राम कपूर को प्रतिदिन सुबह-शाम सेवन करने से लिंग की उत्तेजना कम होती है।

89) त्वचा का सूजकर मोटा व सख्त होना: गुलाबजल के साथ चंदन को घिस लें और इसमें कपूर मिलाकर त्वचा की सूजन पर लगाएं। इससे त्वचा की सूजन मिटती है और त्वचा मुलायम होती है।

90) खसरा: 120 मिलीग्राम कपूर या 5 से 20 बूंद कपूर का रस सेवन कराने से बच्चे को खसरा रोग में आराम मिलता है।

खसरे के दाने जब अपने आप सूख जाए तो उस पर कपूर को नारियल के तेल में मिलाकर लगाना चाहिए। इससे जलन आदि में शांति मिलती है।

91) नाड़ी का रोग: 120 से 240 मिलीग्राम कपूर या 5 से 20 बूंद कपूर का रस का प्रयोग करने से हृदय एवं खून की क्रिया तेज होती है।

एक कपूर को आठ गुने दूध में घोलकर एक चौथाई चम्मच की मात्रा में 4-4 घंटों के अंतर पर लेते रहें। इससे नाड़ी की गति सामान्य होती है।

कपूर को चार गुने सरसों के तेल में मिलाकर शरीर पर मालिश करने से नाड़ी की गति सामान्य होती है।

92) बच्चों के रोग: 3 ग्राम कपूर और 1 ग्राम पठानी लोध्र को पीसकर एक पोटली में बांध लें। इसके बाद इस पोटली को एक घंटे तक पानी में भिगोंकर रखें। फिर इस पोटली को पानी से निकालकर आंखों पर लगाने से आंखों के दर्द, सूजन व जलन आदि दूर होती है।

93) शरीर में सूजन: शरीर में सूजन होने पर कपूर को गाय के घी के साथ मिलाकर लेप बना लें और इस लेप से शरीर पर मालिश करने से सूजन खत्म होती है।

94) मृत त्वचा: चेहरे की डेड स्किन को दूर करने के लिए थोड़े-से दूध में कपूर पाउडर मिलाकर रूई से चेहरे पर लगाएं. थोड़ी देर बाद चेहरा धो लें।

95) खटमल भागने मे: गद्दों व तकियों में कपूर रख देने से खटमल भाग जाते हैं ।

96) जलने पर: जलने पर कपूर लगाने से जलन की तकलीफ़ कम होती है. साथ ही पानी में कपूर घोलकर घाव पर लगाने से जलन कम होती है और ठंडक भी मिलती है ।

97) ज्यादा तंबाकू खाने पर: ज्यादा तंबाकू खाने या ग़लती से तंबाकूवाला पान खा लेने पर चक्कर आता है, ऐसी स्थिति में जी मिचलाता हो, तो कपूर की एक छोटी डली खाने से तुरंत आराम मिलता है ।

98) नाक बंद होने पर: नाक बंद होने की स्थिति में कपूर की पोटली सूंघने से नाक खुल जाएगी ।

99) बिच्छू काटने पर: बिच्छू काटने पर कपूर को सिरके में पीसकर दंश पर लगाने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

100) गर्मी के छाले पर: 10 ग्राम कपूर, 10 ग्राम स़फेद कत्था, 5 ग्राम मटिया सिंदूर- तीनों को एक साथ मिलाकर 100 ग्राम घी के साथ कांसे की थाली में हाथ की हथेली से ख़ूब मलकर ठंडे पानी से धोकर रख लें. इसे घाव, गर्मी के छाले, खुजली और सड़े हुए घाव पर लगाने से शीघ्र लाभ होता है।

101) मक्खियां-मच्छर भागने मे: कपूर जलाने से मक्खियां-मच्छर भाग जाते हैं।

कपूर का तेल बनाने की विधि और उपयोग विधि: Camphor oil benefits

घर पर बनाने के लिए नारियल के तेल या शुद्ध तिल में कपूर के कुछ टुकड़े डालकर इसे किसी एयरटाइट डिब्बे में भरकर रख दें। कुछ समय में नारियल का यह तेल कपूर के सत्वों को ग्रहण कर लेगा।

इस तेल का प्रयोग संधिवात (गठिया) का दर्द, जोड़ों की सूजन, शरीर की गांठ, जख्म व दर्द आदि को दूर करने के लिए किया जाता है।

PHB Education

PHB Education web portal is a great platform and the creator of India's most loved Pharmacy College learning Website. Launched in 2022, PHB Education offers effective learning study material for Pharmacy field and aspirants of competitive exams like D. Pharm, B. Pharm, EXIT EXAM, GPAT, Drug Inspector/Drug Control officer, Pharmacist/Pharmacy officer Exam etc.

Students Support Materials

1. D. Pharm I & II Year Syllabus
2. Subject and chapter wise study materials notes
3. Practical Study materials
   a. Practical Syllabus and list
   b. Subject wise Practicals pdf
4. Pharmacy College exam question papers

Teachers Support Materials

1. D. Pharm I & II Year Syllabus
2. Subject and chapter wise study materials notes
3. Practical Study materials
   a. Practical Syllabus and list
   b. Subject wise Practicals pdf
   c. Subject wise Assignment list
4. Examination record list
5. Pharmacy College exam question papers
6. Subject activity
7. Subject wise lesson plan

Exit Exam 2024

www.phbeducation.com

Address: Gaushala Road, Shamli (U.P.) – 247776
Mob: 91-9719638415
Email: arvindrkgit@gmail.com

Dr. A. K. Gupta (Principal)
(M. Pharm, PDCR, PGDMM & Ph.D)
GATE Exam 2003 Qualified with 97.2 Percentile
Editor- in- Chief (Pharma Herald Bulletin)

HEAD OFFICE

Dr. S. N DEV COLLEGE OF PHARMACY

ADDRESS: -

DELHI – SAHARANPUR ROAD, VILL. SIKKA – SHAMLI

DISTRICT SHAMLI, UTTAR PRADESH – 247776

MOBILE NO. +91-9719638415

E-MAIL: drsndshamli@gmail.com